प्रातः क्लास 1-3-68 ओमशान्ति "आत्मा को एक बाप के सिवाय और याद नहीं।

ओमशान्ति। मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप बैठ समझाते हैं। जैसे हद के सन्यासी हैं वह तो घरबार धंधा-धोरी आद सब छोड़ देते हैं क्योंकि वह समझते हैं हम ब्रह्म में लीन हो जावेंगे। इसलिए दुनिया से आसक्ती छोड़नी चाहिए। अभ्यास भी ऐसे ही करते होंगे। एकान्त में जाकर रहते हैं। शुरूआत की बात करते हैं। विवेक भी ऐसे कहते हैं वह हैं हठयोगी तत्व ज्ञानी। समझते हैं ब्रह्म में लीन हो जावेंगे। इसलिए घरबार से ममत्व मिटाने लिए छोड़ देते हैं। घृणा अथवा वैराग्य आ जाता है। फट से ममत्व नहीं मिटता है। याद आती रहती है। स्त्री बच्चे आद, और अच्छा ही समय याद रहती है। यहां तो तुमको ज्ञान की बुधि सब सब कुछ भूलना है। कोई भी चीज़ इतना जल्दी नहीं भूलती है। अभी तुम यह बेहद का सन्यास करते हो। याद तो सब सन्यासियों को रहती है परन्तु बुधि से समझते हैं हमको ब्रह्म में लीन होना है। देह का भान न रखना है। परन्तु उन से फायदा तो कुछ भी नहीं होता। उंच पद तो मिलता ही नहीं। वह हैं ही हठयोगी मार्ग। समझते हैं हम यह शरीर छोड़ ब्रह्म में लीन हो जावेंगे। उनको यह पता नहीं है कि विनाश होना है। हम शान्ति धाम कैसे जा सकते हैं। अभी तुम जानते हो हमको अपने घर जाना है। जैसे विलायत से आते हैं तो समझते हैं हमको बम्बई जाना है वाया .... अभी तुम बच्चों को भी यह पक्का निश्चय है यह पुरानी तो खत्म होनी है। अभी हमको जाना है नई दुनिया में वाया शान्तिधाम। यह सिर्फ तुमको पता है। वह भी जिनको पक्का निश्चय है। बहुत है जो कहते हैं हां इन्हों की पवित्रता बहुत अच्छी है। ज्ञान अच्छा है, संस्था अच्छी है। माताएं मेहनत बहुत करती हैं। क्योंकि अथक हो समझाती है। अपना तन-मन -धन इसमें लगा देनी है। इसलिए अच्छी लगती है। परन्तु हम भी ऐसा अभ्यास करें वह ख़याल भी नहीं आवेगा। कोई बिरला ही निकलते हैं। वह तो बाप भी कहते हैं कोटों में कोई अर्थात जो तुम्हारे पास आते हैं उन से कोई निकलते हैं। बाकी यह पुरानी दुनिया खत्म होनी ही है। तुम जानते हो अभी बाबा आया हुआ है। सा० होन हो। विवेक कहते हैं बेहद का बाप आया हुआ है। यह भी तुम बच्चे जानते हो। दो बाप है। एक तो है ज्ञान का सागर पारलौकिक बाप। लौकिक को तो कब ज्ञान का सागर नहीं कहेंगे। यह भी बाप आकर तुम बच्चों को अपना परिचय देते हैं। अभी तुम समझते हो यह पुरानी दुनिया खत्म होती है। हमने 84 का चक्र पूरा किया है।

अभी हम पुरुषार्थ करते हैं वापस सुखधाम जाने वाया शान्ति धाम। शान्तिधाम तो जरूर जाना है। वहां से फिर यहां वापस आना है। मनुष्य तो इन बातों में भुंगे हुये हैं। कोई मरता है तो समझते हैं यह भी बैकुण्ठ गया। परन्तु बैकुण्ठ है ही कहां। यह बैकुण्ठ का नाम सिर्फ तुम भारतवासी ही जानते हो। और धर्म वाले जानते नहीं। सिर्फ नाम सुना है। चित्र देखते हैं। देवताओं के मंदिर आद बहुत देखते हैं। जैसे यह दिलवाला मंदिर है लाखों करोड़ों रुपया खर्चा किया है। बनाते ही रहते हैं। उनके लिए फन्ड्स बहुत हैं। देवी-देवताओं को वैष्णव कहेंगे। विष्णु के वंशावली। वह तो है ही पवित्र। ऐसी कोई चीज नहीं होती है जो अपवित्र बने। ड्रामा में पार्ट ही नहीं। सतयुग को कहा ही जाता है पावन दुनिया। अभी पतित है। सतयुग के वैभव आद यहां होते नहीं। यहां तो अनाज आद सब चीज़ तमोप्रधान बन जाती। स्वाद भी तमोप्रधान। बच्चियां ध्यान में जाती है कहती है हम वहां भी सोमरस पीते हैं। बहुत स्वादिष्ट होता है। यह भी तुम्हारे हाथ का खाते हैं तो कहते हैं यह तो बहुत ही स्वादिष्ट है। क्योंकि तुम अच्छी रीत बनाते हो। जैसे बिस्कुट आद स्वादिष्ट होती है ना। तब तो दिल कर के खाते हैं। वहां तो हर चीज़ सतोप्रधान होती है। इसलिए बहुत स्वादिष्ट होती होगी। यह भी तुम अभी ही जानते हो। ऐसे नहीं यहां तुम बहुत योग में रह बनाते हो इसलिए यह स्वादिष्ट हो जाती है, नहीं। यह तो प्रैक्टीस पर है। कोई बहुत अच्छा बनालेते हैं कोई कमबाकी ऐसा नहीं कि योग में रह बनाया इसलिए स्वादिष्ट हुआ। ऐसे नहीं है। पवित्र तो बहुत ही रहते हैं। बाकी वहां नई दुनिया में हर चीज़ सतोप्रधान होती है। इसलिए चीज़ में ताकत रहती है। सतोप्रधान है तो बहुत ताकत रहती

है। तमोप्रधान होने से फिर ताकत कम हो जाती है। बाकी ऐसे नहीं कि मलयुध आद लड़ते हैं। नहीं। उन में भी दुःख होता है ना। वहां दुःख की कोई खेल आद होता ही नहीं। नाम ही है सुखधाम। दुःख की बात ही नहीं। यह भी टेम्पटेशन है ना। हम इतने सुख में जाते हैं। जिसको स्वर्ग सुख कहा जाता है। सिर्फ तुमको पवित्र बनना है सा भी इस जन्म के लिए। पीछे का खयाल तुम मत करो। अभी तुम पवित्र बनो। पहले तो विचार करो कहते कौन हैं। बेहद का बाप का परिचय देना पड़े। बेहद के बाप से बेहद सुख का वर्सा मिलता है। — लौकिक बाप भी पारलौकिक बाप को याद करते हैं। बुधि उपर चली जाती है। जानते कुछ भी नहीं। तुम बच्चे अभी जानते हो। जो निश्चयबुधि पक्के हैं वो तो अन्दर में रहेंगा इस दुनिया में बाकी थोड़े रोज़ हैं। यह तो कौड़ी मिशल शरीर है। आत्मा भी कौड़ी मिशल बनी हुई है। इसको वैराग्य कहो, घृणा कहो-नफरत कहो बात एक ही है। सन्यासी भी कहते हैं स्त्री नागिन है। तो नफरत हुई ना। नफरत अक्षर थोड़ा ... जैसे नालायक अक्षर थोड़ा तीखा है। न लायक कहो तो कुछ खयाल नहीं होगा। अभी तुम ड्रामा को तो जान चूके हो। भक्ति-मार्ग का भी पार्ट चलना ही है। सब भक्ति में हैं। नफरत की दरकार ही नहीं। सन्यासी खुद नफरत दिलाते हैं। घर में सब दुःखी हो जाते। वह खुद जाकर अपने को थोड़ा सुखी करते हैं। वापस मुक्ति में तो कोई भी जा न सके। जो भी आते हैं वापस कोई गया नहीं है। सब यहां ही हैं। एक भी निर्वाणधाम वा ब्रह्म में नहीं गया है। वह तो समझते हैं फ्लाना ब्रह्म में लीन हो गया। यह सब भक्ति-मार्ग के शास्त्रों में है। बाप कहते हैं इन शास्त्रों में जो कुछ है भक्ति मार्ग यानि दुर्गति मार्ग। इसलिए तुम कोई भी शास्त्र हाथ में नहीं उठावेंगे। परन्तु कोई 2 ऐसे भी हैं जिनमें नावल पढ़ने की भी आदत है। ब्राह्मणियां भी छिपा कर नावेल पढ़ती हैं। ज्ञान तो पूरा है नहीं। इसको कहा जाता है कुकर-ज्ञानी। रात को नावेल पढ़ते2 नींद आ जाती। नावल पढ़ते नींद आती है उनकी क्या गति होगी। आदत पड़ जाती है तो फिर पढ़ने बिगर रह नहीं सकती। यहां तो बाप कहते हैं पढ़ा हुआ सब भूलो। बच्चों को भी शरीर निर्वाह अर्थ तो वह विद्या पढ़न की दरकार ही नहीं। उनको तो सिर्फ दो रोटी ही चाहिए। बाप कहते हैं और सब बातें छोड़ दो। स्कूल में पढ़ने जाते हैं तो उन से क्या फायदा होगा। इससे तो इस रूहानी पढ़ाई में लग जाओ। यह तो भगवान पढ़ाते हैं जिससे तुम यह देवता जाकर बनेंगे 2। जन्मों लिए। तो वह जो कुछ पढ़ी हुई है भूलाना पड़ता है। एकदम बचपन में चले जाते हो। अपन को आत्मा समझना है। भल इन आंखों से देखते हैं परन्तु दिव्य बुधि मिली हुई है तो समझते हैं यह सब पुरानी दुनिया है, यह सब खत्म हो जानी है। यह सब कब्रस्थान है। इन से क्या दिल लगावेंगे। अभी तो परिस्थानी बनना है। तुम अभी कब्रस्थान और परिस्थान के बीच में बैठे हो। परिस्थान अभी बन रहा है। अभी बैठे पुरानी दुनिया में परन्तु बीच में। बुधि का योग वहां चला गया है। तुम पुरुषार्थ ही नई दुनिया के लिए कर रहे हो। अभी बीच में बैठे हुये हो पुरुषोत्तम बनने लिए। इस पुरुषोत्तम संगम युग का किसको भी पता नहीं है। पुरुषोत्तम मास पुरुषोत्तम वर्ष का भी अर्थ नहीं समझते हैं। तुम बच्चे जानते हो यह पुरुषोत्तम संगम युग 50 वर्ष का छोटा है। टाईम बहुत थोड़ा मिलता है। देरी से युनिवर्सिटी में आवेंगे उनको तो बहुत मेहनत करनी पड़े। तुम देखते हो इतने समय से माथा मारते हैं याद करने के लिए तो भी याद ठहरती नहीं। माया विघ्न बहुत डालती है। तो बाप समझाते हैं यह पुरानी दुनिया खत्म होनी है। बाप भल यहीं बैठे हैं, देखते हैं, परन्तु बुधि में यह तो सब खत्म हो जाना है। कुछ भी है नहीं। इनके लिए भी ऐसा होता है। बीच में तुम बच्चों को देखते हैं। देखते हुये भी जैसे कि नहीं देखते हैं। यह तो पुरानी दुनिया है इन से नफरत हो जाती है। शरीरधारी भी पुराने हैं। शरीर तमोप्रधान तो आत्मा भी तमोप्रधान ऐसी चीज़ को हम देख कर क्या करें। यह तो कुछ भी नहीं है। इन से प्रीत नहीं। इसलिए कहां भी बाहर नहीं जाता हूं। बच्चों में भी बाबा का दिल उन से लगती है जो बाप को अच्छी रीत याद करते हैं। और सर्विस करते हैं। बाकी वह

बच्चे तो बाप के सभी हैं। कितने ढेर बच्चे हैं। सभी तो कभी देखेंगे भी नहीं। प्रजापिता ब्रहमा कोतो जानते ही नहीं। याद भी नहीं करते हैं। लौकिक बाप और पारलौकिक बाप को याद करते हैं। बाकी इनको मानते ही नहीं। प्रजापिता ब्रहमा का नाम है परन्तु उन से क्या मिलता है यह कुछ भी पता नहीं है। अजमेर में ब्रहमा का मंदिर है। दाढ़ी वाला दिखाया है। परन्तु उनको तोह कोई याद ही नहीं करते। क्योंकि उन से वर्सा मिलना ही नहीं है। आत्मा को वर्सा मिलता है एक लौकिक बाप से दूसरा पारलौकिक बाप से। यह है चन्डाफुल। बाप हाकर और वर्सा न दे। यह तो अलौकिक ठहरा ना। वर्सा होता है हद का और बेहद का। बीच का वर्सा होता ही नहीं। भल प्रजापिता कहते हैं परन्तु वर्सा कुछ भी नहीं। इसलिए बाबा कहते हैं तुम इनका भी फोटो याद क्यों रखते हो। इन से तो कुछ मिलना ही नहीं है। यह तुम अभी जानते हो इस अलौकिक बाप को भी पारलौकिक बाप से वर्सा मिलता है। तो जरूर देंगे कैसे। पारलौकिक बाप इनके द्वारा देता है। यह है रथ। है भी पुराना सड़ा हुआ रथ। इनको क्या याद करेंगे। इनको तो खुद भी उस बाप को याद करना पड़ता है। वह लोग समझते हैं यह ब्रहमा को ही परमात्मा समझते हैं। और पारलौकिक अथवा लौकिक बाप मिशल भी नहीं समझते हैं। क्योंकि इन से वर्सा नहीं मिलता है। वर्सा तो एक शिव बाबा से ही मिलता है। यह तो बीच में दलाल रूप में हैं। जैसे हम वैसे यह। यह भी हमारे जैसा स्टुडन्ट है। डरने की तो कोई बात ही नहीं। बाप कहते हैं इस समय सारी दुनिया ही तमोप्रधान है। अभी तुमको योगबल से सतोप्रधान बनाना है। यह भी बहुत जन्मों के अन्त में पूरा तमोप्रधान है। उन से फिर वर्सा क्या मिलेगा। लौकिक बाप से तो अल्प काल लिए वर्सा मिलता है। तुमको अभी बुधि को बेहद में लगाना है। और कोई से नहीं। बाप कहते हैं सिवाय बाप के और कोई से भी कुछ भी मिलना न है। फिर भल देवतायें हों। उनकी पूजा करते हो, माथा टेकते हैं परन्तु मिलेगा क्या। उन्हों की आत्मा तो तमोप्रधान है। देवतायें जो पहले2 आये वे तमोप्रधान में हैं। लौकिक बाप का वर्सा तो मिलता ही है। बाकी इन ल०ना० से तुम क्या चाहते हो। वह लोग तो समझते हैं यह है ही है। कब मरते नहीं है। तमोप्रधान बनते ही नहीं। तब तमोप्रधान में कौन आवेंगे। सतोप्रधान वाले ही तमोप्रधान में आवेंगे ना। श्रीकृष्ण को ल० ना० से भी ऊंच समझते हैं। क्योंकि वह फिर तो शादी किया हुआ है ना। श्रीकृष्ण तो जन्म से ही पवित्र है। इसलिए श्रीकृष्ण के लिए बहुत महिमा है। तुम झूलों में झुलाते भी हो श्रीकृष्ण को। जयन्ति भी श्रीकृष्ण की मनाते हो। ल०ना० की क्यों नहीं। पूरा ज्ञान न होने कारण श्रीकृष्ण को द्वापर में ले गये हैं। समझते हैं गीता का ज्ञान द्वापर में दिया। कितना कठिन है किसको समझाना। कह देते परम परा से यह ज्ञान चला आया है। परन्तु कब से? यह कोई भी नहीं जानते। पूजा कब शुरू हुई कुछ भी पता नहीं। इसलिए कह देते हम रचता और रचना के आदि मध्य अन्त को नहीं जानते हैं। ऐसे नहीं परम परा कह देते हैं। जब इन ल०ना० का राज्य था तो क्या रावण भी था? लाखों वर्ष आयु कह देने से परमपरा कह देते हैं। तिथ-तारीख कुछ भी नहीं जानते। ल०ना० का भी जन्मदिन मनाते नहीं। इसको कहा जाता है अज्ञानअंधियारा। तुम्हारे में भी यर्थात रीति इन बातों को नहीं जानते हैं। तब तो कहा जाता है महारथी-घोड़ेसवार, प्यादे। गज़ को ग्राह ने खाया। ग्राह बहुत बड़े2 होते हैं। एकदम हप कर लेती है। जैसे सर्प मेढक को हप करता है। (हिस्ट्री सुनाना) अनेक प्रकार के जनावर होते हैं।

भगवान को बागवान, माली, खेवईया क्यों कहते हैं यह भी अभी तुम समझते हो। बाप आकर विषय सागर से पार ले जाते हैं। गाते भी है नईया मेरी पार लगाने वाले।... तुमको भी अभी पता है। हम कैसे पार जाते हैं। बाप हमको उस पार क्षीर सागर में ले जाते हैं। वहां दुःख की बात ही नहीं। जरा भी गफलत की बात नहीं। सिर्फ बाप कहते हैं मामेक याद करो। तुम सेन कर औरों को कहते हो। नईया पार करने वाला खेवईया कहते हैं। बच्चे अपने को आत्मा समझो। तुम पहले क्षीर सागर में थे अभी विषया सागर में आकर पड़े

हो। पहले2 तुम देवतायें थे। वह है वन्डर ऑफ वर्ल्ड। सारी दुनिया में स्थानी वन्डर है स्वर्ग। नाम सुन कर ही कितने खुश होते हैं। हेविन में तो तुम रहते हो। यही सात वन्डर्स कहते हैं। समझो ताज को भी वन्डर कहते हैं परन्तु उसमें रहने वाला थोड़े ही है। तुम तो उस वन्डर ऑफ वर्ल्ड के मालिक बनते हो। तुम्हारे रहने लिए कितना वन्डरफुल वैकुण्ठ बनता है। 21 जन्मों लिए पदमा-पदमपति बनते हो। तो कितनी तुमको खुशी होनी चाहिए। हम उस पार जा रहे हैं। अनेक बार तुम बच्चे स्वर्ग में गये होंगे। यह चक्र हम लगाते ही रहेंगे। तो पुरुषार्थ भी ऐसा करना चाहिए ना। नई दुनिया में पहले2 जावें। पुराने मकान में जाने थोड़े ही दिल होगी। बाबा जोर देते रहते हैं पुरुषार्थ कर नई दुनिया में जाओ। बाप से हम वन्डरऑफ वर्ल्ड के मालिक बनते हैं। तो ऐसे बाप को हम क्यों नहीं याद करेंगे। इकदम पुरुषार्थ में लग जाना चाहिए। बहुत मेहनत करनी है। शौक चाहिए ना। बाप कहते हैं तुम सब से आगे जा सकते हो। किसको देखो ही नहीं। जानते हैं यह तो तमोप्रधान दुनिया है। इनको देखते हुये जैसे कि नहीं देखो। बाप कहते हैं मैं भल देखता हूं परन्तु मेरे में ज्ञान है। मैं थोड़े ही रोज के लिए आया हूं। मैं मुसाफिर हूं। जैसे बाबा वैसे तुम भी यही आये हो पार्ट बजाने। पुरानी चीज़ को क्या देखना है। यह है घर बैठे सारी विश्व का सन्यास। पति को भी देखते हुये समझते हैं यह तो पुराना शरीर है। हमको तो अभी बेहद का बाप मिला है, विश्व का मालिक बनना है। यह पाई-पैसे को क्या करेंगे। पति को देखते हुये नहीं देखते हैं। अगर वह बाप को याद नहीं करते हैं तो उन से नफरत आती है। क्योंकि हंस और बगुला हो गया ना। वह हो गया रावण सम्प्रदाय। दुश्मन। परन्तु इसमें बड़ी ताकत चाहिए। कितनी मारें खाती हैं। कोई तो कहते हैं बाबा इनको कुछ बुद्धि दो। तो हमारे बन्धन टूटें। या तो इससे मर जावे। इसने हमको बहुत तंग किया है। अज्ञान काल में लौकिक बाप का भी बच्चा नालायक होता है तो कहते हैं इससे तो यह मर जाता। बेहद का बाप भी ऐसे ही कहते हैं। फिर समझते हैं इनके तकदीर में जो होगा वही होगा। बाप तो कहेंगे इतना तंग करते हैं अ इससे तो अ ने घर चले जाये तो अच्छा है। ऐसे नहीं कहते हैं कि मर जावे। अपने घर अर्थात मृत्युलोक में जाये।

अभी तुम विष्णुपुरी के मालिक बनते हो। तुम स्थानी वैष्णव बनते हो। यह तो हैं जिसमानी वैष्णव। मूल बात तो है विकार की। हम वैष्णव उनको कहते हैं जो विकार में नहीं जाते हैं। वैष्णव अक्षर विष्णु से निकला है। विष्णु के संतान हैं देवतायें। वह तो विकार में जाते ही नहीं। बोलो तुम तो कलियुग वैष्णव हो। वह सतयुग में थे तुम नर्क में हो। ऐसी2 बातें सुनाओ तो नशा चढ़े। काम कटारी चलाना यह हिंसा बड़ी भारी है। यह आदि मध्य अंत, जन्म-जन्मान्तर दुःख देने वाली है। तुम्हारे में भी जब योग का जौहर होगा तब तीर अच्छा लगेगा। बाबा हर चीज़ को जानते हैं। घर की हाल-चाल सब बाबा पूछते हैं। स्त्री छिपा कर लिखती है बाबा हमको पति तंग करते हैं। और उन से पूछें तो कहेंगे हम तो पवित्र रहते हैं। बाबा तो चोटी पर बहुत जोर से चढ़ाते हैं। बहिन-भाई के सम्बन्ध से भी ऊपर जाओ। भाई2 समझो। बहिन-भाई की सम्बन्ध बाद फिर भाई2 का सम्बन्ध आता है। जब नज़दीक आते हो तो कहा जाता है भाई2 के सम्बन्ध से देखो। हरेक को अपना खुद डॉक्टर बन अपनी नब्ज़ देखनी है। अन्तर्मुख होकर देखो हमारे में कोई अवगुण तो नहीं है।

यह भी अभ्यास करना है, यह तो सब खत्म हो जाने वाला है। बाल-बच्चे सभी दुनिया ही खत्म होनी है। यह जब पक्का हो तब ही ममत्व भी निकलता जाये। अगर अपना कल्याण करना चाहते हो तो। बाप समझाते हैं अभी पुरुषार्थ न करेंगे तो अन्त में बहुत पछतावेंगे। हमको बाप ने कितना समझाया हमने माना नहीं। अब तो हमारा यह पद हो जावेगा। तुम ऊपर से नीचे उतरते2 एकदम मैले हो गये हो। फिर साफ करना है। खुशी होनी चाहिए हम सारे विश्व का पावन बनाने के निमित्त बने हैं। बाप का फरमानबरदार बच्चा बनना चाहिए। ज्ञान और योग में कच्चे तो पद भी कम। बाप समझाते तो बहुत अच्छी रीत हैं। अच्छा मीठे बच्चों को गुड मॉर्निंग। नमस्ते।